❋ 20 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बाप से वर्सा क्या मिलता है? बच्चे जानते हैं बाप है ही स्वर्ग का रचयिता तो जरूर स्वर्ग का वर्सा ही देंगे और देंगे भी जरूर नर्क में। नर्क का वर्सा दिया है रावण ने। इस समय सब नर्कवासी हैं ना। तो जरूर वर्सा रावण से मिला है। नर्क और स्वर्ग दोनों है। यह कौन सुनते हैं? – आत्मा। अज्ञान काल में भी सब कुछ आत्मा करती है, परन्तु देह-अभिमान के कारण समझते हैं– शरीर सब कुछ करता है। हमारा स्वधर्म है शान्त।

2] यह शास्त्र आदि सब भक्ति मार्ग के लिए बैठ बनाये हैं। शास्त्र हैं ही भक्ति मार्ग के लिए, न कि ज्ञान मार्ग के लिए। ज्ञान मार्ग का शास्त्र बनता ही नहीं। बाप ही कल्प-कल्प आकर बच्चों को नॉलेज देते हैं, देवता पद के लिए। बाप पढ़ाई पढ़ाते हैं फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है।

3] वहाँ हिंसा की कोई बात ही नहीं। अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म कहा जाता है। यहाँ है हिंसा। पहली-पहिली हिंसा है काम कटारी चलाना। सतयुग में विकारी कोई होता नहीं।

4] मूल बात है विकार की। देह-अभिमान से ही विकार पैदा होते है। उनमें काम है नम्बरवन। बाप कहते हैं यह काम महाशत्रु है, उन पर जीत पानी है। बाप ने बहुत बार समझाया है अपने को आत्मा समझो। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं।

❋ योग-

1] बच्चे, तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया तो कब्रिस्तान बननी ही है। अब इस कब्रिस्तान से दिल हटाए परिस्तान नई दुनिया से ममत्व लगाओ। जैसे लौकिक बाप नया मकान बनाते हैं तो बच्चों का बुद्धियोग पुराने मकान से निकल नये मकान से लग जाता है। ऑफिस में बैठा होगा तो भी बुद्धि नये मकान में ही होगी। वह है हद की बात। बेहद का बाप तो नई दुनिया स्वर्ग रच रहे हैं। कहते हैं पुरानी दुनिया से सम्बन्ध तोड़ एक मुझ बाप से जोड़ो। तुम्हारे लिए नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करने आया हूँ।

❋ धारणा-

1] बाप बच्चों को कहते हैं– बच्चे, अपने को आत्मा समझो।

2] सबको कहते हैं आत्मा निश्चय बुद्धि हो बैठो, देह-अभिमान छोड़ो। यह देह विनाशी है, तुम अविनाशी हो।

❋ सेवा-

1] पहले-पहले तो हर एक मनुष्य को बाप का परिचय देना है। दो बाप तो हर एक को होते हैं। हद का बाप हद का सुख देते हैं, बेहद का बाप बेहद का ही सुख देते हैं।

2] मनुष्य तो घोर अन्धियारे में है। आसुरी सम्प्रदाय हैं ना। कहते है कलियुग तो अभी रेगड़ी पहनते हैं, (छोटे बच्चे जैसे घुटने के बल पर चलना), समझते हैं अभी बहुत वर्ष पड़े हैं। कितना अज्ञान अन्धेरे में सोये पड़े हैं। यह भी खेल है। सोझरे में दु:ख नहीं होता, अन्धियारे में रात को दु:ख होता है। यह भी तुम ही समझते हो और समझा सकते हो।